ऑडियो नं. 37 कम्पिल ता. 28.05.92 मु. 30.1.91

(सिर्फ बीकेज़ और पीबीकेज़ के लिए)

आज है 30.1.91 का प्रातःक्लास। गीत है– तुम्हें पाके हमने जहाँन पा लिया है... क्या कहा? (किसी ने कहा– तुम्हें पाके के हमने जहाँ पा लिया।) आज कौन–सी तारीख है? 28 मई 92।

तुम्हें पाके हमने जहाँ पा लिया है। मीठे–2 रूहानी बच्चों ने गीत सुना। कैसे मीठे बताए? अव्यक्त वाणी में बोला है– **"किशमिश जैसे मीठे"**। कैसे मीठे? किशमिश जितनी मीठी होती है, ऐसे मीठे–2 बच्चों ने गीत सुना, कौन–सा? तुम्हें पाके हमने जहाँन पा लिया। ये किसने कहा मीठे–2 रूहानी बच्चे? ज़रूर रूहानी बाप ही कह सकते हैं रूहानी बच्चे। और बच्चे क्या कहेंगे? मीठे–2 रूहानी बच्चे बाप ही कहते हैं। अभी सन्मुख में बैठे हैं और बाप बहुत प्यार से समझाय रहे हैं। अभी माना कब? पुरुषोत्तम संगमयुग पर।

अब तुम जानते हो सिवाय रूहानी बाप सर्व को सुख, शांति वा सर्व को इस दुःख से लिबरेट करने वाला दुनिया भर में और कोई मनुष्य नहीं हो सकता; इसलिए दुःख में बाप को याद करते हैं। तुम बच्चे सन्मुख बैठे हो। जानते हो, बाबा हमको सुखधाम के लायक बनाय रहे हैं। सदा सुखधाम का मालिक बनाने वाले बाप के हम सन्मुख आए हैं। और समझते हो सन्मुख सुनने और दूर रहकर सुनने में बहुत फ़र्क होता है। क्या फ़र्क होता है? दूर रहकर के भी वो ही वाणी कैसेट में सुनी जाएगी। कैसेट जो है वो वायब्रेशन नहीं पकड़ेगा, कैसेट में हाव–भाव नहीं होंगे, चैतन्य चित्र भी नहीं होगा। तो समझते हो सन्मुख सुनने और दूर रहकर सुनने में बहुत फ़र्क है। इसलिए गीत क्या चला आज? (किसी ने कहा– तुम्हें पाके जहाँन पा लिया) एक तो ये गीत चला मुरली में, वो तो पहले का हो गया और आज का– शिव साकार से मिलन मनाओ।

मधुबन में सन्मुख आते हो। मधुबन में किसलिए आते हैं? सन्मुख मिलन मनाने के लिए। मधुबन मशहूर है। मधुबन में उन्होंने कृष्ण का चित्र दिखाया है। किन्होंने? भक्तिमार्ग वालों ने। तो उन्होंने कृष्ण का चित्र क्यों दिखाय दिया? जब कृष्ण तो भगवान होता नहीं और चित्र उन्होंने कृष्ण का दिखाय दिया है। (किसी ने कहा– बात अभी संगमयुग की है) बात संगमयुग की कैसे है? (किसी ने कुछ कहा– ...) हाँ। मधुबन में उन्होंने कृष्ण का जड़ चित्र रख दिया है; परंतु कृष्ण है नहीं। (किसी ने कहा– सोल है) सोल है? (किसी ने कहा– सोल भी कहाँ है वो तो जड़ चित्र है ना।) जड़ चित्र है। गुलज़ार दादी में वो चैतन्य सोल आती है, बाक़ी वो कोई कृष्ण नहीं है। वो जो सोल आती है उसको क्या कहेंगे? ब्रह्मा कहेंगे या कृष्ण कहेंगे? (किसी ने कहा– ब्रह्मा है ना!) हाँ।

तुम बच्चे जानते हो इसमें मेहनत लगती है। इस बात को समझाने में मेहनत लगती है। अपने को घड़ी–2 आत्मा निश्चय करना है। मैं आत्मा बाप से वर्सा ले रही हूँ। बाप एक ही समय आते हैं सारे चक्र में। ये कल्प का सुहावना संगमयुग है। इनका नाम रखा है पुरुषोत्तम। यही संगमयुग है जिसमें सभी मनुष्य मात्र उत्तम बनते हैं। 84 जन्मों में से हमारा उत्तम ते उत्तम जन्म कौन–सा है, जिसमें हम उत्तम ते उत्तम पार्ट बजाते हैं, जिसका शास्त्रों में गायन होता है और मंदिरों में मूर्तियाँ और चित्र बनते हैं? ये पुरुषोत्तम युग ही है, जिसमें हम अपने उत्तम चेहरे को जान लेते हैं। तो जानेंगे तभी तो बनेंगे। अगर पहले जानेंगे ही नहीं, पहले निश्चय ही नहीं करेंगे तो फिर बनेंगे कैसे! अभी तो सभी मनुष्य मात्र की आत्माएँ तमोप्रधान हैं। सो फिर सतोप्रधान बनती हैं। भल तमोप्रधान हैं; लेकिन तमोप्रधान होते हुए भी बुद्धि तो तीक्ष्ण है ना! तो बुद्धि की स्टेज से तो जान सकते हैं ना। तो भल तमोप्रधान तो सभी हैं, जो फिर सतोप्रधान बनती हैं। सतोप्रधान हैं तो मनुष्य उत्तम होते हैं। तमोप्रधान होने से मनुष्य भी कैसे हो जाते हैं? कनिष्ठ हो जाते हैं। तो अब बाप आत्माओं को सन्मुख बैठ समझाते हैं।

क्या बात सन्मुख समझाते हैं? कि निष्कृष्ट हो, कनिष्ठ पार्ट हो और चाहे उत्तम पार्ट हो, सारा पार्ट आत्मा ही बजाती है, न कि शरीर बजाता है? (किसी ने कहा– शरीर नहीं बजाता।) पार्ट कौन बजाता है? आत्मा बजाती है शरीर के द्वारा। शरीर तो पार्ट नहीं बजाता। पार्टधारी कोई शरीर नहीं है। पार्टधारी आत्मा है। तुम्हारी बुद्धि में आ गया है कि हम आत्मा असुल में निराकारी दुनिया वा शांतिधाम में रहने वाले हैं। **असुल**। और नकल में? नकल में इस देह की दुनिया और देह के संबंधों की दुनिया में रहने वाले हैं। और असुल में कहाँ के रहने वाले हैं? शांतिधाम। शांतिधाम कहाँ है? जहाँ बाप आत्मिक स्टेज में रहकर के वो शांतिधाम का निर्माण करता है। इसलिए मुरली में बोला है– **"तुम बच्चे परमधाम को भी इस सृष्टि पर उतार लेंगे।"** तो असुल में निराकारी दुनिया वा शांतिधाम की रहने वाली आत्माएँ हैं। ये किसको भी पता नहीं है, न खुद समझाय सकते हैं। तुम्हारी बुद्धि का अब ताला खुला है। तुम समझते हो बरोबर आत्माएँ परमधाम में रहती हैं। जो बाप का धाम है बड़े ते बड़ा घर।

बड़े ते बड़ा घर किसका? बाप का। बाप परमपिता है तो उसका घर भी परमधाम है। तो बरोबर आत्माएँ परमधाम में रहती हैं, कि शरीर रहते हैं? (किसी ने कहा– आत्मा रहती है।) देह–अभिमानी वहाँ नहीं रह सकते, उनकी बुद्धि बाहर भाग जाएगी और आत्मा–अभिमानी हैं तो बाप के पास रहते हैं। वह है इनकॉरपोरियल वर्ल्ड। (किसी ने कहा– निराकारी दुनिया) हाँ। निराकारी दुनिया। यानी कॉरपोरियल वर्ल्ड नहीं है। पाँच तत्वों का शरीर या

पाँच तत्वों की कोई भी चीज़ वहाँ नहीं है और यह है कॉरपोरियल वर्ल्ड। (किसी ने कहा– साकारी दुनिया) कौन–सी दुनिया? जिस दुनिया में हम रहते हैं। यहाँ सब आत्माएँ एक्टर्स, पार्टधारी हैं। पहले–2 हम पार्ट बजाने आते हैं, फिर नंबरवार आते जाते हैं। सभी एक्टर्स इकट्ठा नहीं आते हैं। पहले–2 हम पार्ट बजाने आते हैं। हम क्यों कहा? मैं क्यों नहीं कह दिया? (किसी ने कहा– दो हैं।) दो! पहले–2 हम पार्ट बजाने आते हैं। दो माने कौन? (किसी ने कहा– राम और कृष्ण।) प्रजापिता और बच्चे। फिर नंबरवार आते जाते हैं। अभी बताया, कहाँ से आते हैं? परमधाम की स्टेज से। सभी एक्टर्स इकट्ठे नहीं आय सकते, आएँगे नंबरवार। भिन्न–2 प्रकार के एक्टर्स आते जाते हैं। सब इकट्ठे तब होते हैं जब नाटक पूरा होता है। अभी तुमको पहचान मिली है। किस बात की? नाटक पूरा हुआ। तो अभी तुम बच्चों को सन्मुख सुनने में बड़ा मज़ा आता है। इतना मज़ा मुरली पढ़ने से नहीं आता है, जितना? जितना **सन+मुख,** मुख के सामने सुनने में मज़ा आता है। यहाँ सन्मुख हो ना! कहाँ?

ये भी समझते हो भारत गॉड–गॉडेज़ का स्थान था; अभी नहीं है। चित्र देखते हो, था ज़रूर। हम वहाँ के रहवासी थे। पहले–2 हम देवता थे। अपने पार्ट को तो याद करेंगे कि भूल जाएँगे? बाप कहते हैं– ''तुमने यह–2 पार्ट बजाया।'' ये ड्रामा है। नई दुनिया सो फिर ज़रूर पुरानी दुनिया होती है। बाप क्या कहते हैं? तुमने यह–2 पार्ट बजाया। अच्छा भी पार्ट बजाया और फिर बुरा भी पार्ट बजाया। जब सतोप्रधान युग होता है तो सतयुगी शूटिंग में श्रेष्ठ पार्ट। और जब तमोप्रधान युग होता है तो तमोप्रधान युग में आत्मा तामसी पार्ट बजाती है; वो ही आत्मा। तुमने यह–2 पार्ट बजाया। तो ये ड्रामा है। इसमें कोई ये प्रश्न करने की दरकार नहीं है कि बाबा तो पहले कितने प्यारे थे, बहुत प्यार भरा... ये तो बाबा का पार्ट नहीं हो सकता या कोई कहे कि मम्मा तो पहले ऐसी थी, ये तो मम्मा नहीं हो सकती। तो इस बात का कोई प्रश्न नहीं हो सकता। या विश्व किशोर भाऊ तो पहले ऐसे थे, ये तो विश्व किशोर भाऊ का पार्ट नहीं दिखाई पड़ता। तो बाप कहते हैं, तुमने ये–2 पार्ट बजाया। ये ड्रामा है। ये कौन कहता है? ये पहचान बाप ही देते हैं। नई दुनिया सो फिर ज़रूर पुरानी होती है।

पहले–2 ऊपर से जो आत्माएँ आती हैं, वो गॉल्डेन एज में आती हैं। ये सब बातें अभी तुम्हारी बुद्धि में हैं। तुम विश्व के मालिक महाराजा–महारानी थे। तुम्हारी राजधानी थी। जब महाराजा–महारानी थे तो राजधानी किसकी थी? तुम्हारी। अभी तो राजधानी है नहीं। किसकी? (किसी ने कहा– तुम्हारी।) तुम्हारी नहीं, तो किनकी है? (किसी ने कहा– रावण की।) अभी रावण की है? (किसी ने कहा– रावण–राज्य है ना।) रावण का राज्य है राजधानी दिल्ली में? ये कैसे? राम का कोई असर ही नहीं है, प्रभाव नहीं है? (किसी ने कहा– अभी राज्य नहीं है, अभी युद्ध चल रहा है) अभी राज्य नहीं है? युद्ध चल रहा है अभी रावण से? अच्छा। अभी तुम सीख रहे हो। अभी राजधानी है नहीं। अभी तुम राजधानी पर राज्य करना सीख रहे हो। मतलब रावण ने सीख लिया है! रावण ने राजधानी के ऊपर राज्य करना सीख लिया और हम सीख रहे हैं! (किसी ने कहा– वो तो कर रहा है ना बहुत दिनों से) हाँ। वो कर रहा है, हालाँकि कैसे करना चाहिए ये तो रावण भी नहीं जानता।

हम राजाई कैसे चलाएँगे ये तुम सीख रहे हो। वहाँ वज़ीर होते नहीं। राजाई चलाएँगे कैसे? वहाँ वज़ीर नहीं होते हैं सलाह–मशविरा लेने के लिए; क्योंकि वहाँ राजा की ही बुद्धि सतोप्रधान होती है, तो किसी से राय लेने की दरकार नहीं होती। (किसी ने कहा– बाबा, उस दिन मैंने कहा था, तो आपने कहा एक वज़ीर होता है) मतलब बाप ही होता है, अलग से कोई वज़ीर... (किसी ने कहा– बाबा, वो वज़ीर थोड़े ही हुआ) अब बाप की बात तो मानी ही जाती है। सलाह तो होगी, बाप है ना! बाकी कोई अलग से वज़ीर नहीं होगा। राय देने वाले की दरकार नहीं। कहाँ? सतयुग में। वो तो श्रीमत द्वारा श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ बन जाते हैं। फिर इनको दूसरे कोई से राय लेने की दरकार नहीं रहती है। **दूसरे कोई से**। अरे, बाप तो कौन हुआ? दूसरा हुआ? वो तो अपना हुआ। दूसरे कोई से राय लेने की दरकार नहीं है। अगर कोई से राय ले तो समझा जाएगा इनकी बुद्धि कमज़ोर है। जो राय देता है उसी की बुद्धि, वो ही तीखी बुद्धि हो गई। फिर तो वो ही राजा होना चाहिए।

अभी जो श्रीमत मिलती है वो सतयुग में भी कायम रहती है। अभी तुम समझते हो पहले–2 बरोबर इन देवी–देवताओं का आधा कल्प राज्य था। अब तुम्हारी आत्मा रिफ्रेश हो रही है। ये नॉलेज परमात्मा के सिवाय कोई भी आत्माओं को दे नहीं सकता। अभी तुम बच्चों को देही–अभिमानी बनना है। शांतिधाम से यहाँ तुम टॉकी बने हो। देही–अभिमानी और आत्मा–अभिमानी में अंतर क्या बताया? देही–अभिमानी स्टेज होती है शांतिधाम की और टॉकी जो स्टेज होती है वो कहाँ की होती है? कॉरपोरियल वर्ल्ड। साकारी दुनिया की। तो अभी तुम क्या बन गए हो? बोल–2 करने वाले बहुत बन गए हो। (किसी ने कहा– साकारी स्टेज में) हाँ, साकारी स्टेज में आय गए हो। शांतिधाम से यहाँ तुम टॉकी बने हो। बहुत बोलता, तो समझ लो क्या हो गया? साकार दुनिया का साकार निवासी देह–अभिमानी हो गया और कम बोलता या बिल्कुल ही नहीं बोलता, सिर्फ इशारे से, तो उतना ही आत्मा–अभिमानी हुआ; शांतिधाम का वासी हुआ। (किसी ने कहा– इशारे से तो सूक्ष्मवतन में नहीं ...) सूक्ष्मवतन में नहीं, स्वर्ग में। (किसी ने पूछा– स्वर्ग में इशारे की भाषा होगी?) स्वर्ग में इशारे की भाषा होगी। बाकी सूक्ष्मवतन में तो सूक्ष्म वायब्रेशन्स की भाषा है। (किसी ने पूछा– स्वर्ग में देह होगी तो इशारे से बात होगी?) वहाँ ज़्यादा बात नहीं करते; क्योंकि वहाँ शांति बहुत होगी। जब मन से मन मिल जाता है तो ज़्यादा बात करने की दरकार नहीं रहती और जब

मन से मन में भेद होता है तो फिर बात और लड़ाई, वाचा ज़्यादा चलती है। तो शांतिधाम से यहाँ तुम टॉकी बने हो। यहाँ में और शांतिधाम में ये अंतर पड़ गया। अब तुम्हें बनना कहाँ का वासी है? (किसी ने कहा– शांतिधाम का वासी) बाप के घर का वासी बनना है। टॉकी होने बिगर कर्म हो नहीं सकता। क्या? अगर कर्म करना है तो कुछ न कुछ काम करने के लिए कुछ न कुछ बोलना पड़े। तो ये बड़ी समझने की बातें हैं। जैसे बाप में सारा ज्ञान है, वैसे तुम्हारी आत्मा में भी ज्ञान है। आत्माएँ कहती हैं– हम एक शरीर छोड़ संस्कार अनुसार फिर दूसरा शरीर लेती हूँ। पुनर्जन्म भी ज़रूर होता है। आत्मा को जो भी पार्ट मिला हुआ है, वो पार्ट आत्मा बजाती रहती है। संस्कारों अनुसार दूसरा जन्म लेते रहते हैं।

दूसरा पेज आत्मा की दिन प्रतिदिन प्योरिटी की डिग्री कम होती जाती है। क्या? जितने–2 जन्म लेते जाते, जितने ज़्यादा जन्म–मरण के चक्कर में आएँगे उतनी ही प्योरिटी की स्टेज कम होती जाएगी। माना जितना निश्चय–अनिश्चय के चक्र में आएँगे उतनी ही पवित्रता की पावर कम होती जाएगी। इसका मतलब कोई ऐसी भी आत्मा होगी, जो निश्चय–अनिश्चय के चक्र में ना आती हो, तो उसके ऊपर इम्प्योरिटी का असर भी कम पड़ेगा। अनिश्चय का फाउन्डेशन कब पड़ता है? (किसी ने कुछ कहा– ...) नहीं। (किसी ने कहा– इम्प्योरिटी से।) इम्प्योरिटी कहाँ से आती है? (किसी ने कहा– संगठन की कमी) इम्प्योरिटी होगी तो यूनिटी की कमी हो ही जाएगी; लेकिन अनिश्चय कहाँ से आता है? (किसी ने कहा– बाप के पास से।) बाप के पास से आता है? अनिश्चय जो हो जाता है, बाप के पार्ट पर ही सही, वो कैसे आता? कहाँ से आता? (किसी ने कहा– संशयबुद्धि ...) संशय कैसे आता? कहाँ से आ जाता? (किसी ने कहा– समझ नहीं पाते तो आएँगे संशय में) हाँ, संग का रंग या तो बुद्धि से या वाचा से या दृष्टि से या वायब्रेशन से लगता है, और लगता है तो संशय आ जाता है। तो आत्मा की दिन प्रतिदिन प्योरिटी की डिग्री कम होती जाती है। जितने–2 जन्म–मरण के चक्र में आते जाते हैं, उतना–2 प्योरिटी की पावर कम होती जाती है। तो शूटिंग पीरियड में इस बात को अच्छी तरह ध्यान में रखने का है, क्या? कि जो निश्चय एक बार कर लिया उस पर अटल रहें। जितने हम अटल रहेंगे उतनी प्योरिटी की पावर हमारे अंदर बनी रहेगी। और अटल कब रहेंगे? जब एक के अलावा किसी दूसरे का संग का रंग न लगाएँ।

पतित अक्षर द्वापर से काम में लाते हैं। सतयुग, त्रेता में ये नहीं कहेंगे। क्या? पतित। क्यों? (किसी ने कहा– होते ही नहीं हैं।) क्यों? पतित नहीं होते? तो कलाएँ कैसे कम होती जाती हैं? (किसी ने कहा– पुनर्जन्म में आते–2।) पुनर्जन्म होता है, तो कलाएँ कम होती हैं ना? तो आत्मा कुछ न कुछ डीग्रेड, पतित तो होती है ना! पतित माना गिरना। कुछ न कुछ गिरावट तो आती है? (किसी ने कहा– आती है गिरावट) तो फिर पतित अक्षर द्वापर से काम में क्यों लाते हैं? पहले ही हो जाना चाहिए। (किसी ने कहा– क्योंकि उस समय बीजरूप आत्मा आती है। किसी ने कहा– दूसरों का संग लग जाता। किसी ने कहा– द्वापर से और धर्मों की आत्मा आती है।) नहीं! सतयुग, त्रेता में पति–पत्नी के रूप में जो संग का रंग है, वो किसी और का, दूसरी आत्मा का नहीं लगता। 21 जन्म लगातार एक का ही संग रहता है; इसलिए वहाँ पतित नहीं कह सकते। यानी वहाँ व्यभिचार पैदा नहीं होता। और ये व्यभिचार कहाँ से पैदा होता है? (किसी ने कहा– द्वापरयुग से आता है) दो+पुर, द्वापर से ये व्यभिचार पैदा होता है। तभी से पतित अक्षर शुरू हो जाता है। इसलिए पतित द्वापर से कहा जाता है। सतयुग, त्रेता में पतित अक्षर नहीं कहेंगे। पतन कब हुआ? जब कोई दूसरा घुस पड़ा। फिर भी थोड़ा–सा फ़र्क ज़रूर पड़ता है। भले पतित अक्षर नहीं है; लेकिन थोड़ा–2 फ़र्क पड़ता है; लेकिन ज़्यादा फ़र्क नहीं पड़ता। तो ज़्यादा फर्क नहीं पड़ता; क्योंकि दुनिया है, दुनिया तो नीचे की तरफ जाती ही है। सृष्टि का जो क्रम है वो तो ऊपर से नीचे की ओर है। सतोप्रधान, सतोसामान्य, रजो और तमो चार अवस्थाओं से सृष्टि को गुज़रना ही है, तो कुछ न कुछ तो गिरावट होगी; लेकिन ऐसी ज़्यादा गिरावट नहीं होगी जो दिखाई पड़े। ये कब होती है? पतन होता है दो पुर से, द्वापर से। तुम नया मकान बनाओ, एक मास के बाद कुछ फ़र्क ज़रूर पड़ेगा। तो इसका मतलब ये थोड़े ही कि एक मास के बाद मकान पुराना हो गया तो उसे छोड़ दें। सो थोड़े ही छोड़ दिया जाएगा।

अभी तुम बच्चे समझते हो बाबा हमको वर्सा दे रहे हैं। बाप कहते हैं, हम आए हैं तुम बच्चों को वर्सा देने। जितना जो पुरुषार्थ करेगा उतना पद पाएगा। किस बात का? स्वर्ग का वर्सा लेने का जितना जो पुरुषार्थ करेगा, नर्क का नहीं कहा। द्वापर, कलियुग में भी प्राप्ति तो होती है, राजाएँ तो वहाँ भी बनते हैं; लेकिन वो सतयुग त्रेता की प्राप्ति के आधार पर 63 जन्मों का भी हिसाब–किताब बन जाता है। तो असली प्राप्ति कहाँ की हुई? सतयुग, त्रेता की। तो सतयुग–त्रेता का जो पुरुषार्थ है, जो किया वो तो संगमयुग में परमात्मा ने कराया। अब जो जितना पुरुषार्थ करेगा, किस बात का? प्योरिटी को कायम रखने का, संग के रंग से बचने का उतना पद पाएगा। बाप के पास कोई फ़र्क नहीं है। क्या? कि यानि कोई ये कहे कि बाप जो है इस आत्मा के साथ ज़्यादा पक्षपात कर रहा है और हमारे साथ जो है परमात्मा अन्याय कर रहा है, तो ऐसी कोई बात नहीं है। यहाँ तो न्याय, अन्याय बाप नहीं करते हैं; लेकिन आत्मा की अपनी मुट्ठी के अंदर है अपना भाग्य। चाहे तो... ; क्योंकि परमात्मा ने बता दिया जितना तुम प्योरिटी का पुरुषार्थ करोगे उतनी तुमको प्राप्ति होगी और जितने व्यभिचारी बनने का मनसा में आएगा या वाचा में आएगा या कर्मणा में आयेगा, तो उतना तुम्हारी प्योरिटी की शक्ति क्षीण होगी और तुम्हारा पद नीचा हो जाएगा।

बाप जानते हैं, हम आत्माओं को पढ़ाता हूँ। आत्मा का हक है बाप से वर्सा लेने का। इसमें मेल, फिमेल की दृष्टि नहीं रहती है। क्या? चाहे मेल हो, चाहे फिमेल हो। यहाँ बाप की दृष्टि ये नहीं रहती कि ये मेल है, ये फिमेल है तो मेल को वर्सा, बच्चे को वर्सा ज़्यादा दिया जाए और फिमेल को वर्सा कम दिया जाए। ऐसी कोई बात नहीं है। सभी आत्माएँ ब्रदर्स हैं। तुम सब बच्चे हो, बाप से वर्सा ले रहे हो। ब्रदर्स को बाप पढ़ाते हैं, वर्सा देते हैं। बाप ही रूहानी बच्चों से बात करते हैं। हे लाड़ले, मीठे, सिकीलधे बच्चों! तुम बहुत समय पार्ट बजाते–2 अब फिर आकर के मिले हो; अपना वर्सा लेने के लिए। आत्मा अविनाशी है। इसमें अविनाशी पार्ट नुँधा हुआ है। शरीर तो बदलता रहता है बाक़ी आत्मा सिर्फ़ पवित्र से अपवित्र बनती है; पतित बनती है। सतयुग में है पावन। इसको कहा जाता है– पतित दुनिया। जब देवताओं का राज्य था तो वाइसलेस वर्ल्ड थी। राज्य किसका था? देवताओं का राज्य था, तो दुनिया भी वाइसलेस थी, निर्विकारी थी और असुरों का राज्य है रावण राज्य अभी, तो दुनिया कैसी है? विकारी। तो अब कौन–सी दुनिया बनानी है? (किसी ने कहा– निर्विकारी) असुरों वाली दुनिया के राज्य में रहना है या देवताओं वाली दुनिया में रहना है? (किसी ने कहा– देवताओं वाली दुनिया में।) अगर मन–बुद्धि से देवताओं की दुनिया में रहेंगे तो सारी दुनिया सुखी हो जाएगी; क्योंकि तुम्हारे पुरुषार्थ की ऊँगली, और सारी दुनिया के लिए सुख और शांति। थोड़े समय के लिए त्याग, और प्राप्ति खुद को भी अनेक गुनी और दुनिया की सब आत्माओं को, जो त्राहि–2 कर रहे हैं उनके लिए भी अनेक गुनी प्राप्ति।

तो देवताओं का राज्य था तो वाइसलेस वर्ल्ड थी; अभी नहीं है। तो ये खेल हुआ ना। नई दुनिया को पुरानी दुनिया, पुरानी दुनिया फिर नई दुनिया ये चक्कर चलता ही रहता है तो चलने दें? (किसी ने कहा– चलना ही है) चलना ही है? यानी शूटिंग पीरियड में हम ये चक्कर चलने ही दें! (किसी ने पूछा– रोक सकते हैं?) क्यों नहीं रोक सकते, हमारे हाथ में बात नहीं हो गई! निश्चय बुद्धि विजयन्ति, अनिश्चयबुद्धि विनश्यन्ति; जब हमें पता लग गया। ये तो अपनी–2 धारणा की बात है कि जो जितना निश्चय को कायम रखने के लिए पुरुषार्थ करेगा– एक बाप दूसरा ना कोई तो उतना ज़्यादा, उतना अधिक जन्मों तक पवित्रता की स्टेज को धारण किए रहेगा। क्योंकि बाबा ने बोला है– **''सब धर्मों से जास्ती सुख तुम्हारे धर्म में है।'' (मु. 21.6.65 पृ.1 अंत)** ''तुम बच्चे सबसे जास्ती सुख भोगते हो।'' तो जो देवी–देवता सनातन धर्म की आत्माएँ हैं, उनमें भी तो नंबरवार हैं। कोई तो ऐसी भी आत्माएँ होंगी जो 82, 83 जन्म तक भी सुखी रहेंगी। क्यों रहेंगी? कारण क्या? क्योंकि उन्होंने अनिश्चय और निश्चय के चक्र में ज़्यादा चक्र नहीं लगाया। न लगाने का कारण क्या हुआ कि संग का रंग चेंज नहीं किया। एक बाप मिल गया तो एक बाप दूसरा ना कोई। तो वाइसलेस वर्ल्ड थी। अभी नहीं है। ये खेल है दुनिया को पुरानी, पुरानी से नई दुनिया बनना ही है। भले शूटिंग का चक्कर चल रहा है, हमें मालूम भी है; लेकिन फिर भी हम क्या पुरुषार्थ करें? हम जो हैं वो नई दुनिया ही बनाने का पुरुषार्थ करें। ये नहीं कि पुरानी दुनिया तो बननी ही है तो फिर आराम से नीचे सरक जाओ।

अभी सुखधाम स्थापन होता है बाक़ी सब आत्माएँ मुक्तिधाम में रहेंगी। अब ये बेहद का नाटक आकर पूरा हुआ। सब आत्माएँ मच्छरों मिसल जाएँगी। कैसे जाएँगी? मच्छरों सदृश। मच्छरों सदृश क्यों कहते हैं? और कोई कीड़ा, मकोड़ा क्यों नहीं कह दिया? क्योंकि मच्छरों का झुण्ड जो है ढेर सारा उड़ता है। मच्छरों सदृश जाएँगी और मच्छर की कोई कीमत नहीं। मच्छर काटता है और फट से हाथ वहाँ पहुँच गया, मर गया बिचारा। मर जाए तो मर जाए! तो मतलब आत्माएँ जो हैं बिल्कुल निरहंकारी स्टेज में, छोटे रूप में हो जाती हैं। मच्छरों मिसल जाएँगी। इस समय कोई भी आत्मा आए तो पतित दुनिया में उनकी क्या वैल्यू होगी? जैसे मच्छर की कोई वैल्यू नहीं, फट से मार देते हैं। वैसे ही जो आत्माएँ हैं, जब आत्मिक स्टेज में हो जाती हैं तो (देह की) कोई वैल्यू नहीं होती। तो ये समय है। क्या? कि इस समय कोई भी आत्मा आए तो पतित दुनिया में उनकी क्या वैल्यू होगी? अभी इस दुनिया में उनकी कोई वैल्यू नहीं है। वैल्यू उनकी है जो पहले–2 नई दुनिया में आते हैं। इस दुनिया में जो सबसे पहले आएगा उसकी वैल्यू है। और पहले कौन आएगा?

30.1.91 का प्रातः क्लास, दूसरे पेज का मध्यादि। तो पहले–2 जब हम नई दुनिया में आते हैं तो वैल्यू उनकी है जो पहले–2 आते हैं। तो पहले–2 कौन आते हैं? पहले–2 तो लक्ष्मी–नारायण, फिर 8, फिर 108, फिर 16,000 और फिर? साढ़े चार लाख प्रजा। तो तुम जानते हो जो नई दुनिया थी, वैल्यू कौन–सी होनी चाहिए? जो पहले–2 आने वाली आत्माएँ हैं उनकी ज़्यादा वैल्यू होती है; क्योंकि वो जास्ती सुख भोगने वाली हैं। नई दुनिया में हम देवी–देवता थे, वहाँ दुःख का नाम नहीं था। यहाँ तो अथाह दुःख है। बाप आकर के दुःख की दुनिया से लिबरेट करते हैं। ये पुरानी दुनिया बदलनी ज़रूर है। जैसे दिन के बाद रात और रात के बाद दिन होता है। भक्तिमार्ग को रात और ज्ञानमार्ग को दिन कहा जाता है। भक्तिमार्ग में मनुष्य ठोकरें खाते हैं। ज्ञानी हैं, बाप को पहचानने वाले हैं, तो ज्ञानी हुए। अपनी आत्मा के स्वरूप को निश्चय करने वाले हैं तो ज्ञानी हुए। ज्ञानी किसे कहा जाए? ज्ञानी को किस बात का ज्ञान होता है? आत्मा और परमात्मा का। एक होती है सामान्य नॉलेज आत्मा परमात्मा की कि मैं आत्मा बिंदी और मेरा परमात्मा बाप बिंदी। वो तो सब आत्माएँ बिंदी, परमात्मा बाप भी बिंदी तो इसमें क्या विशेष नॉलेज हो गई! विशेष नॉलेज क्या? कि मैं आत्मा कौन–सा विशेष पार्ट बजाने वाली हूँ और मुझ विशेष पार्ट बजाने

वाली आत्मा को विशेष पार्टधारी किसने बनाया? कैसे बनाया? कब बनाया? वो पूरी नॉलेज बुद्धि में आ जाए तो हुआ ज्ञानी और अगर ये बात भूल जाए तो हो गया अज्ञानी। अज्ञान कहाँ से आता है? रावण से। और ज्ञान कहाँ से आता है? बाप से। तो अज्ञान है भक्तिमार्ग। भक्तिमार्ग में मनुष्य ठोकरें खाते हैं। ठोकर खाना माना दर–2 के धक्के खाते हैं। ज्ञान अर्थात् दिन में एक भी ठोकर नहीं। वहाँ तो सुख ही सुख है।

तुम समझते हो बरोबर हम सतयुग के मालिक थे, फिर 84 जन्मों के बाद ऐसे बने हैं। कैसे? ऐसे पतित बने हैं। अब फिर बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम स्वर्ग के मालिक बनेंगे। तो हम क्यों न अपने को आत्मा निश्चय कर और बाप को याद करें। क्या निश्चय करें? कि हम बिंदी आत्मा हैं। बस? (किसी ने कहा– विशेष आत्मा हैं) हाँ। ये निश्चय करें कि हम कौन–सी कैटेगरी की आत्मा हैं। कम से कम इतना तो निश्चय पहले कर लें, क्या? कि ये जो दस धर्म हैं खास–2, उनमें से हम कौन–से धर्म विशेष की आत्मा हैं। (किसी ने कहा– देवी–देवता धर्म) हम हैं देवी–देवता सनातन धर्म की विशेष आत्मा। जब देवी–देवता सनातन धर्म की विशेष आत्मा हैं तो 84 जन्म लेने वाले हैं या कम जन्म लेने वाले हुए? (किसी ने कहा– 84 जन्म।) जो पूरे 84 जन्म लेने वाले हैं वो पहले–2 आते हैं। दूसरे धर्मवालों के मुक़ाबले वो ज़्यादा सुखी रहेंगे। (किसी ने कुछ कहा– ...) उनका सुख कम हो जाएगा, और दूसरी बात? यही नहीं कि 84 जन्म लेने वाले, 84 जन्म लेने वालों में तो प्रजा भी होगी। प्रजावर्ग की बात नहीं, हम तो? (किसी ने कहा– राजा बनेंगे) हाँ। बाप राजयोग सिखाने आए हैं। हमने इतनी मेहनत की, किस बात के लिए की? प्रजा बनने के लिए? (किसी ने कहा– ब्रॉड ड्रामा में राजा बनने के लिए।) प्रजा बनने वाली आत्माएँ तो वो भी हो जाती हैं जो सिर्फ एक दिन प्रदर्शनी सुनती हैं, ज्ञान सुनती हैं और चली जाती हैं, कोई पुरुषार्थ नहीं करतीं। वो भी बाप के सामने एक बार सुन लिया तो वो भी प्रजा में आ जायें। फिर? तो ये कोई उन्होंने पढ़ाई नहीं पढ़ी। पढ़ाई किस बात की है? राजाई प्राप्त करने के लिए। तो ज़िन्दगी भर बैरिस्टरी पढ़ी, डॉक्टरी पढ़ी और न बैरिस्टर बने, न डॉक्टर बने तो सारी पढ़ाई बेकार गई ना!

तो तुम समझते हो बरोबर हम सतयुग के मालिक थे। 84 जन्मों के बाद अब हम ऐसे बने हैं। अब फिर बाप कहते हैं मुझे याद करो। अपन को आत्मा निश्चय कर और बाप को याद करो। यानी विशेष आत्मा हम अपने को निश्चय कर लें। क्या विशेष आत्मा? कि हम देवी–देवता सनातन धर्म के सिर्फ नौ लाख या साढ़े चार लाख में आने वाले नहीं हैं; लेकिन पहले–2 आने वाले हैं। कुछ तो मेहनत करनी होगी ना! क्यों? बहुत करनी पड़ेगी कि मूड़े पै (सिर पर) चढ़े राहें चंद्रमा की तरह? कुछ तो मेहनत करनी होगी ना! राजाई पाना कोई सहज थोड़े ही है। पार्वती अम्मा को ये विशेष ईर्ष्या होती थी कि हम तौ इनकी पत्नी हैं। हमको बैठा दौ नीचे गोद में, और गंगा जी को और चंद्रमा को बैठा दौ मूड़ पै (सिर पर)। बताओ, मस्तक पर बैठाल दिया। क्यों? ऐसा क्यों किया? ये दो भाति क्यों की? सारी ज़िन्दगी की, जन्म जन्मांतर की चिरसंगिनी बनी पार्वती बिचारी और बैठाय किसको दिया मूड़ पै (सिर पर)? गंगा जी को और चंद्रमा जी को। (किसी ने कहा– जो गोद में है हर समय दिखाई तो वही देगी ना!) अच्छा, गोद वाली दिखाई देगी और जो मूड़ पै (सिर पर) चढ़ा हुआ है, वो दिखाई ही नहीं देगा? ये तो वो ही बात हो गई, जैसे कृष्ण जी के सामने दुर्योधन पहुँचा, तो दुर्योधन जो है सर की तरफ़ खड़ा हो गया, अर्जुन पाँव की तरफ खड़ा हुआ था। तो नज़र पहले पड़ी जो पाँव के सामने खड़ा हुआ था और जो सर पर खड़ा हुआ उसके ऊपर बाद में नज़र पड़ी, तो भगवान की प्राप्ति पहले किसने कर ली? अर्जुन ने कर ली। और उनको फिर दुनियावी मान–मर्तबा मिल गया, दुनियावी धन–दौलत मिल गई, दुनिया की सेना मिल गई। (किसी ने कहा– अर्जुन को भगवान मिला) अर्जुन को भगवान...। अब भगवान एक तरफ़ और सारी दुनिया एक तरफ़, जीत किसकी होगी? भगवान की होगी। तो कुछ तो मेहनत करनी होगी ना! राजाई पाना कोई सहज थोड़े ही है।

बाप को याद करना है। ये माया का वंडर है जो घड़ी–2 तुमको भुलाय देती है। किसका वंडर है? ये माया का बड़ा भारी वंडर है, (किसी ने कहा– तमोप्रधान दुनिया) हाँ। जो घड़ी–2 तुमको भुलाय देती है। तो मायावियों का संग मत करो। क्या कहा? संग किसका करें? बाप का करो। माया को बाप क्या कहते हैं? एक तो मौसी कहते हैं। दूसरा, माया को बेटी कहते हैं। और बेटी हो, हो तो बेटी और करे क्या? और नज़र उसकी ख़राब हो जाए तो माया हुई ना! है बेटी और नज़र उसकी ख़राब हो गई तो माया बेटी हुई। तो ऐसी माया बेटियों का संग कम करो ना! किसका संग करो? बाप का संग करो। तो ये माया का वंडर है जो घड़ी–2 तुमको भुलाय देती है। आय हाय! फिर ज्ञान कौन समझेगा? उसके लिए उपाय रचना चाहिए कि माया बेटी जो है हमको घड़ी–2 ना भुलाय सके। क्या उपाय करें भाई? (किसी ने कहा– एक का संग करना है।) हाँ। ऐसे नहीं सिर्फ मेरा बनने से याद जम जाएगी। सरेंडर तो ढेर होते हैं; 16,000 सरेंडर हो जाएँगे एक दिन। 16,000 सरेंडर हो जाएँगे; सरेंडर होना कोई बड़ी बात नहीं है। हाँ, वो भी ठीक है, सरेंडर होंगे नहीं, बाप के बनेंगे नहीं, तो पद भी नहीं; क्योंकि बाप के जो प्रैक्टिकल में बनेंगे वो ही पद पाएँगे। बनेंगे ही नहीं तो पद भी नहीं पाएँगे। तो सरेंडर होना भी अच्छी चीज़ है; लेकिन सिर्फ़ कोई ये समझ ले बस, सरेंडर हो गए, वाह! बस, उसी से सब कुछ हो जाएगा, सो नहीं हो सकता।

तो माया हमको घड़ी–2 न भुलाए, उसके लिए उपाय रचना चाहिए। क्या उपाय रचेंगे? (किसी ने कहा– एक बाप दूसरा न कोई।) हाँ। एक का संग और दूसरे कोई का संग न करें। न मंसा में, न वाचा में, न कर्मणा में,

न दृष्टि में, न वृत्ति में। तो ऐसे नहीं मेरा बनने से याद जम जाएगी। बाकी पुरुषार्थ क्या करेंगे? कि भई, हम तो बाप के बन गए, बाक़ी क्या पुरुषार्थ करें? बताओ। अब तो हम बन गए बाप के। (किसी ने कुछ कहा– ...) नहीं, जब तक जीना है, बाप का ही, एक बाप दूसरा न कोई– ये बनने का पुरुषार्थ करना है। ज्ञान अमृत पीते रहना है। किससे? (किसी ने कहा– बाप से।) बाप से! वो तो ज्ञानामृत कहीं भी रह के पीते रहेंगे। अब तो कैसेटें भी बनने लगी हैं। पहले तो कैसेटें बनती थीं तब फिर टेपरिकॉर्डर इतने बढ़िया नहीं थे, तो बाबा की आवाज़ बौ–बौ–बौ–बौ, एक तो बूढ़ा बाबा, तो बात ही समझ में नहीं आती थी और दूसरे फिर देहधारी धर्मगुरुओं ने वो कैसेटें भी छुपाय दीं, तोड़–मरोड़ फेंक दीं, वो मिलती नहीं हैं ओरिजिनल। अब तो? अब तो ओरिजिनल सन्मुख। (किसी ने पूछा– उस समय में, ब्रह्मा बाबा के समय में कैसेटें थीं?) हाँ, बाद में टेपरिकॉर्डर जब से आया तब से ये कैसेटें, उनकी कॉपियाँ निकलने लगीं। पहले शॉर्ट हैण्ड किया जाता था, जब कैसेट, टेपरिकॉर्डर नहीं था। बाद में कैसेट होने लगी। तो जब तक जीना है पुरुषार्थ करना है, ज्ञान अमृत पीते रहना है। तो ज्ञान अमृत तो कहीं भी पिया जा सकता है। (किसी ने कहा– क्लास में न आएँगे, पढ़ेंगे नहीं, मुरली नहीं सुनेंगे तो) क्लास तो कहीं भी सेंटर में किया जा सकता है। (किसी ने कुछ कहा– ...) हाँ। सन्मुख का जो महत्व है, जो असर सन्मुख में पड़ेगा, वो असर दूसरी जगह नहीं पड़ सकता।

ये भी समझते हो, हमारा ये अंतिम जन्म है। इस शरीर का भान छोड़ देही–अभिमानी बनना है। अंतिम जन्म में देह–अभिमानी होंगे कि देही–अभिमानी होंगे? ऐसे थोड़े ही कि अंतिम जन्म है तो हम आत्मा–अभिमानी होंगे! सब आत्माएँ अंतिम जन्म में देह–अभिमानी तो होंगी ही होंगी। गृहस्थ व्यवहार में भी रहना है। पुरुषार्थ ज़रूर करना है। किस बात का? (किसी ने कहा– एक बाप दूसरा न कोई) सिर्फ़ अपने को आत्मा निश्चय कर बाप को याद करो। त्वमेव माता च पिता त्वमेव। क्या पुरुषार्थ करो? तू ही मेरी माता है, तू ही मेरा बाप है। (कुछ लोगों ने कुछ कहा– ...) क्या लिखा? (कुछ लोगों ने कुछ कहा– ...) क्या सबद कहते हैं? या तो हवाला नहीं दो, या तो हवाला दो, तो बताओ। ये तो संस्कृत का श्लोक है– त्वमेव माता च पिता त्वमेव। त्वमेव बंधु च सखा त्वमेव। त्वमेव विद्या द्रविणम् त्वमेव। त्वमेव सर्वम् मम देव देव।। तो त्वमेव माता च पिता यानी तुमसे ही मेरे सर्व संबंध हैं। कोई दूसरे से संबंध नहीं है। मेरा तो एक, दूसरा न कोई। तो याद करो। ये सब है भक्तिमार्ग की महिमा। वो तो भक्तिमार्ग में ऐसे ही कहते रहते हैं, तुम एक से संबंध तो जोड़ते नहीं; क्योंकि संबंध तो साकार में होगा या निराकार में हो जाएगा? संबंध तो शरीर से होता है। निराकार में कैसे हो जाएगा! निराकार का तो सिर्फ एक ही संबंध है– आत्मा बच्चे और परमात्मा बाप। भाई–बहन का भी संबंध नहीं बनता। तो ये जो भक्तिमार्ग में महिमा करते आए हैं– त्वमेव माता च पिता... ये तो सिर्फ भक्तिमार्ग की महिमा है, बाकी प्रैक्टिकल कहाँ होता है? प्रैक्टिकल यहाँ ज्ञानमार्ग में होता है। ये प्रैक्टिकल बात यहाँ की है कि तू ही मेरा माता, पिता, सर्व–संबंधी तू ही है।

तुमको सिर्फ़ एक अलफ को याद करना है। एक ही मीठी सैक्रीन है। ये नहीं अलफ के साथ फिर बे भी जोड़ दो। अलफ कौन? और बे कौन है? ब्रह्मा बादशाह, और अलफ? प्रजापिता। अल्लाह। माने सबसे ऊँचा। अल्लाह माना अव्वल, पहला। बाक़ी बिंदु तो बिंदु है, नुक़्ता है उसको अलफ और बे पे टे ते से इन अक्षरों की गिनती में नहीं कहेंगे। तो एक ही मीठी सैक्रीन है। और सब बातें छोड़ सैक्रीन हो जाओ। जैसे सैक्रीन में सारा सार समाया हुआ होता है। ऐसे इस सारे झाड़ की सैक्रीन कौन हुआ? प्रजापिता। सारी मनुष्य सृष्टि का जो सैक्रीन है वो एक बीज हो गया, तो उसमें समा जाओ। अभी तुम्हारी आत्मा सतोप्रधान बनी है। उनको सतोप्रधान बनाने याद की यात्रा में रहो। सबको यही बताओ, बाप से सुख का वर्सा लो। सुख होता ही है सतयुग में। सुखधाम स्थापन करने वाला बाबा है। बाप को याद करना है। ये है बहुत सहज। क्या? है तो सहज राजयोग; लेकिन फिर कठिन क्यों हो जाता है? (किसी ने कहा– माया मौसी भुला देती है) हाँ। **है तो बहुत सहज**; परंतु माया का ऑपोज़िशन बहुत है। जे बेटियाँ कहा, जे बेटी कहाँ से आय गई? परंतु माया का ऑपोज़िशन बहुत है; इसलिए कोशिश कर मुझ बाप को याद करो। ये बेटी, ये बेटी का संग जो है, (किसी ने कहा– निकाल के बाहर फेंक दो) नहीं, निकालकर बाहर फेंकने की बात नहीं कही। ये नहीं कहा कि काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार को छोड़ दो या अहंकारियों को छोड़ दो, कामी, क्रोधियों को छोड़ दो; लेकिन उनको कन्वर्ट करना है। (किसी ने कहा– परिवर्तन) हाँ, उनको बदलना है। क्या? बदला न लो उनसे; लेकिन उनको भी बदल के दिखाना है। तो इसका मतलब उनको फेंक देंगे निकाल के, (किसी ने कहा– अपने मन से निकालना है) नहीं। याद नहीं करना है। उनका संग का रंग अपने में नहीं लाने देना है। संग का रंग लगे तो किसका लगे? एक सैक्रीन का, बाप का। तो कोशिश कर मुझ बाप को याद करो। कोशिश किस बात की? बाप को याद करने की और माया को भुलाने की, तो खाद निकल जाएगी। जो खाद पड़ी हुई है दूसरे, दूसरे मेटल की खाद जो पड़ गई है, जैसे दूध में पानी मिल जाता है तो वो भी दूध के लिए खाद हो गई। तो जो खाद पड़ी है वो निकल जाएगी। (किसी ने कहा– योग अग्नि से भस्म) हाँ।

सेकिंड में जीवनमुक्ति गाया जाता है। हम आत्मा रूहानी बाप के बच्चे हैं। वहाँ के रहने वाले हैं फिर हमको अपना पार्ट रिपीट करना है। इस ड्रामा के अंदर सबसे जास्ती हमारा पार्ट है। क्या कहा? क्या बोला? इस ड्रामा के अंदर सबसे जास्ती हमारा पार्ट है और सुख भी सबसे जास्ती हमको मिलेगा। ये हमको कौन है? (किसी ने कहा–

84 जन्म पूरा लेने वाले) 84 जन्म पूरे लेने वाले नौ लाख हैं। जो राजघराने की आत्माएँ हैं वो ज़्यादा सुख भोगने वाली हैं; क्योंकि उन्होंने राजयोग सीखा है; बाप का बनकर के। (किसी ने कहा– मेहनत ज़्यादा की ना) हाँ। 16000, और 16,000 में भी जो राजा बनने वाली हैं। एक तो सिर्फ राजयोग सीखा; राजा नहीं बनी या रानी नहीं बनी और एक है सीखा भी और बने भी, तो वो हैं 108 युगल मणके जो राजा–रानी बनते हैं। फिर उनमें भी नंबरवार। (किसी ने कहा– नम्बरवार गद्दी निकलेगी) हाँ। कोई किस धर्म का, कोई किस धर्म का बीज। तो ड्रामा के अंदर सबसे जास्ती हमारा पार्ट है। हमारा कहने वाला कौन हुआ फिर? **एटलिस्ट** आख़िर में कौन हुआ हमारा कहने वाला? (किसी ने कहा– विष्णुवंशी) हाँ। हमारा पार्ट का मतलब विष्णु में, विष्णु फरिश्ता में जो आत्माएँ आती हैं, वो सारे ही वैष्णव कुल के हो गए।

तो वैष्णव कुल के मुखिया कौन–2 आत्माएँ हुई? चार आत्माएँ हो गईं। कौन–2 सी? (किसी ने कहा– ब्रह्मा–सरस्वती, शंकर–पार्वती।) ब्रह्मा–सरस्वती? सरस्वती तो लास्ट में आई, बाद में आई और पहले चली गई। बीच में आई, बीच में ही चली गई। राम, कृष्ण और सीता और राधा। राधा–सीता और राम–कृष्ण– ये चार आत्माएँ हैं और उनको, चारों को चलाने वाली आत्मा। वो कौन? चारों को चलाने वाली भी... विष्णु में चार भुजाएँ हैं, भुजाओं को चलाने वाला भी तो कोई बाप है। बाप को विष्णु कहेंगे? बाप तो बाप है। गॉडफादर इज़ वन। (किसी ने कुछ कहा– ...) बाप सिर्फ़ आत्माओं का ही बाप होता है? मनुष्यों का बाप नहीं है कोई? (किसी ने कहा– है।) तो जो मनुष्यों का बाप है वो सबको चलाने वाला है। बाकी चार आत्माएँ हुईं– लक्ष्मी के साथ नारायण और राम के साथ सीता। (किसी ने कहा– वो तो विकारी आत्मा में आ गया, किसी ने कहा– राम तो उसी में आ गया) तुम्हें पता ही नहीं है कि त्रेता में जाकर राम कौन बनेगा। (किसी ने कुछ कहा– ...) तो फिर तो ये तो पढ़ाई का आगे का चक्कर है, जो समझते जाओ। (किसी ने कहा– राम की आत्मा तो सीता बन जाएगी) वो त्रेता की बात मत करो। सतयुग, त्रेता की तो शास्त्रों में हिस्ट्री नहीं है। यहाँ की बात समझो पहले। इस ड्रामा के अंदर सबसे जास्ती हमारा पार्ट है, सुख भी जास्ती हमको मिलेगा। किनको मिलेगा? हमको।

बाप कहते हैं– तुम्हारा देवी–देवता धर्म बहुत सुख देने वाला है और बाकी सब शांतिधाम में चले जावेंगे; जितने भी हैं। ऑटोमेटिकली चले जाएँगे; हिसाब–किताब चुक्तू कर। जास्ती विस्तार में हम क्यों जाएँ? यानी दूसरे धर्मों के विस्तार में हम क्यों जाएँ? हम माने कौन? पहले तो चार। जो राम–सीता वाली आत्मा या राधा–कृष्ण वाली आत्मा, उनको ज़्यादा विस्तार में जाने की दरकार नहीं है। और ये बोल कौन रहा है? बाप बोल रहा है। बाप में भी कौन–सा बाप? किसके लिए ये बात लागू होगी? 'हम' किसने कहा? (किसी ने कहा– प्रजापिता, किसी ने कहा– ब्रह्मा बाबा है साथ में) कहा तो शिवबाबा ने ही; लेकिन शिवबाबा ने कहा तो प्रजापिता तो ज़रूर आ गया उसमें। ऐसे तो नहीं हो सकता कि प्रजापिता के बग़ैर शिवबाबा कह देगा। तो एक बाप, और इसके अलावा चार आत्माएँ और, ये टोटल मिलकर के पाँच आत्माएँ बनती हैं। (किसी ने कहा– एक शीश और चार भुजाएँ) हाँ, चार सहयोगी आत्माएँ।

बाप आते ही हैं सबको वापस ले जाने के लिए। मच्छरों सदृश सबको ले जाते हैं। सतयुग में बहुत थोड़े होते हैं। सबको कैसी स्टेज में ले जाएँगे? (किसी ने कहा– निराकारी स्टेज में।) मच्छरों (सदृश)। मच्छरों सदृश का मतलब जिनकी कोई वैल्यू... जो अपनी वैल्यू को मिट्टी में मिला दें। क्या? जिनको मान–मर्तबे की कोई आस न रह जाए कि हमें इस दुनिया का कोई मान–मर्तबा नहीं। जब बाप आया, उसी को टट्टी, भित्तर, ठिक्कर, मिट्टी–2 में ठोंक दिया, तो अब हम क्या मान–मर्तबा करें! हम क्या मान–मर्तबा लेंगे इस दुनिया में! परमात्मा की इतनी ग्लानि कर दी, तो हमको क्या मान–मर्तबा लेना है! तो मच्छरों सदृश सबको ले जाते हैं। सतयुग में बहुत थोड़े होते हैं। ये सारी ड्रामा में नूँध है। शरीर ख़तम हो जाएँगे। आत्मा जो अविनाशी है वो हिसाब–किताब चुक्तू कर चली जाएगी। क्या कहा? (किसी ने कहा– शीघ्र ही सब खत्म हो जाएँगे) हाँ, आत्मा जो अविनाशी है, उसका हिसाब–किताब चुक्तू हो जाएगा। किससे हिसाब–किताब चुक्तू हो जाय? जो भी आत्माओं का हिसाब–किताब है, 84 जन्मों का हिसाब–किताब है या 63 जन्मों का हिसाब–किताब है? हिसाब–किताब कितने जन्मों का है? 63 जन्मों का है या 84 जन्मों का है? (किसी ने कहा– 63 जन्मों का। किसी ने कहा– सभी 84 लेते ही हैं) चलो, हम तो 84 की ही बात करेंगे। 84 जन्म लेने वालों की बात कर रहे हैं, तो उनमें हिसाब–किताब कितने जन्मों का है? (किसी ने कहा– 63 जन्मों का।) 63 जन्मों का हिसाब–किताब है ना! सतयुग, त्रेता में तो कोई हिसाब–किताब बनता ही नहीं; बराबर रहता है। तो 63 जन्मों में जो हिसाब–किताब बना है, वो ही हिसाब–किताब लेने वाले, संग का रंग लेने या लगाने के लिए हमारे सामने संगमयुग में आते हैं। अब वो माया रावण के रूप में आएँ या हमारे सुख देने वाले बाप के रूप में या माता के रूप में आएँ; क्योंकि मात–पिता से जास्ती सुख तो कोई दे नहीं सकता। तो ऑटोमेटिकली चले जाएँगे हिसाब–किताब चुक्तू करके। तो जास्ती विस्तार में हम क्यों जाएँ! बाप आते ही हैं सबको वापिस ले जाने।

ऐसे नहीं कि आत्मा आग में पड़ने से पवित्र हो जावेगी। क्या? (किसी ने कहा– आत्मा तो आग में जाती ही नहीं, वो तो पहले ही निकल जाती है) आत्मा आग में पड़ने से पवित्र हो जाएगी ऐसे नहीं है। आत्मा को याद रूपी योग अग्नि से पवित्र होना है। आग कौन–सी है? और याद की अग्नि कौन–सी है? (किसी ने कहा– योगाग्नि)

(किसी ने कहा– काम की आग) एक तो है कामाग्नि। रावण काहे में जल रहा था? (किसी ने कहा– कामाग्नि में।) तो कामाग्नि की भी एक याद होती है। (किसी ने कहा– उसमें थोड़े ना पवित्र होना है, किसी ने कहा– उसमें तो पतित ही बनेंगे) जो कामाग्नि की याद है, तो उसने किसको याद किया; रावण ने? (कुछ लोगों ने कुछ कहा– ...) राम को याद किया? राम को तो दुश्मन के रूप में याद किया। वास्तव में याद किसको किया? सीता के लिए राम से दुश्मनी ले ली, तो कामाग्नि हुई ना! तो उस कामाग्नि के आधार पर जो याद आई... उसके आधार पर जो याद आएगी, उससे तुमको पवित्र नहीं होना है। होना किससे पवित्र? योगाग्नि। योग माना लगन, लगाव, प्यार, स्नेह। तो योग की अग्नि है ना! लगन की अगन। उन्होंने फिर नाटक बैठ बना दिए हैं– रामायण, महाभारत, देवासुर संग्राम। सीता आग से पार हुई। क्या दिखाय दिया है? कि सीता आग से पार हुई। आग से कोई थोड़े ही पार होना है। सीता ने किससे क्रॉस किया? स्थूल अग्नि की तो बात ही नहीं यहाँ। बाप तो स्थूल बातें करते ही नहीं। कौन–सी आग की बात है? (सभी ने कहा– काम अग्नि) कामाग्नि से पार किया, क्रॉस किया। (किसी ने कहा– जीत गई) हाँ, जीत गई। (किसी ने कहा– रावण के वश नहीं हुई) हाँ, उसके वशीभूत नहीं हुई, आँख उठाके भी नहीं देखा। बाप समझाते हैं, तुम सब सीताएँ इस समय पतित हो। कोई एक सीता की बात नहीं है। सब सीताएँ हो, सब पार्वतियाँ हो, सब द्रौपदियाँ हो; लेकिन? (किसी ने कहा– राधाएँ नहीं हैं) हाँ। राधा नहीं कहा। समझाते हैं, तुम सब सीताएँ हो। इस समय पतित हो। रावण के राज्य में हो।

तीसरा पेज। अब एक बाप की याद से तुमको पावन बनना है। राम तो एक ही है। कि दो/चार हैं? (किसी ने कहा– राम एक है, सीताएँ अनेक हैं।) अग्नि अक्षर सुनने से समझते हैं, आग से पार हुई। (किसी ने कहा– नाटकों में तो ऐसे ही दिखाते हैं) हाँ। तो न कोई स्थूल अग्नि की बात है, न कामाग्नि की बात है, (न) क्रोधाग्नि की बात है। पार काहे से हुई? विषय–वैतरणी नदी की बात है ना। कहाँ योग–अग्नि और कहाँ वो अग्नि। कहाँ कामाग्नि और कहाँ योगाग्नि। तो क्रॉस करने की बात है ना। किसको क्रॉस करना है? विषय–वैतरणी नदी को क्रॉस करने की बात है, बाक़ी कोई स्थूल आग की बात नहीं है। आत्मा परमपिता परमात्मा से योग रखने से ही पतित से पावन होगी। याद किसको करना है? परमपिता परमात्मा को। रात दिन का फ़र्क़ हो गया। हेल में सब सीताएँ रावण की जेल में शोक वाटिका में हैं। हेल माना? (किसी ने कहा– नर्क।) हेल माना भाड़, जिसमें चबेना भूँजा जाता है। उसमें क्या होती है? आग। आग ही आग होती है। तो ये दुनिया भी क्या बन जाती है? दिन–प्रतिदिन इस दुनिया में गंद ही बढ़ता जावेगा। तो ऐसी स्टेज हो जाएगी जैसे कि भाड़ में चबेना भुँजता रहता है। हेल में सब सीताएँ रावण की जेल में शोक वाटिका में हैं। यहाँ का सुख तो कागविष्टा के समान है। इस हेल का सुख क्या होगा? कागविष्टा के समान। कागविष्टा क्यों कहा? हंस विष्टा क्यों नहीं कह दिया? जानवर तो जानवर। कौवा जो है वो दूसरों की टट्टी खाता है। दूसरों का भोगा भुगाया और उसमें से जो कुछ बचा–खुचा सो उसने खा लिया। उसी में अपने को सुखी मानता है कि हमें बड़ी उपलब्धि हो गई। तो इस दुनिया के सुख जो हैं वो कैसे सुख हैं? कागविष्टा समान हैं। जो भोगा–भुगाया है उसको भोगने वाले को कौवा कहा जाता है। मुँह से काँव–काँव बहुत करता है। खुद भी गंद खाता है, दूसरों को भी बुलाता है, तुम भी आके खाय लो। भेंट की जाती है, किससे? कौवे से। (ओमशांति।)